2

कुछ अल्फाज़ अनुस्वार और अनुनासिक के लिए

डॉ. मनु

सहभागी आचार्य, पच्चनूर प्रादेशिक केन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय

कभी कभी अदीब भी ये नहीं सोचते कि किरदारों की तामीर में कैसे–कैसे अल्फाजों से उनकी देन असरदार बन जाती है । अदीब का ध्यान सभी तरह के किरदारों पर होगा मगर पाठक का ध्यान कभी–कभी छोटे–छोटे किरदारों पर नहीं पड़ेगा । लेकिन ऐसे छोटे–छोटे किरदार भी अपनी छोटी–छोटी मौजूदगी में बड़ी–बड़ी देन प्रदान करने में सक्षम दिखायी देते हैं ।

अदब ने जो–जो गुफ्तगू किरदारों के जरिए पेश की है उनके दायरे और दायरे से परे होकर हम मतलबों को तलाश कर सकते हैं । ये मतलब किसी को अच्छा लगेगा,ते किसी को बुरा लगेगा । नजर का अंदाजा बदल जाने पर किरदार कभी–कभी घटिया बन जाएगा तो कभी–कभी बढ़िया । इस तरह के कई मतलब एक किरदार के जरिए हमें प्राप्त हो जाते हैं तब मैं मानने लगता हूँ कि वही किरदार मेरेलिए सच्चा व प्यारा है । एक किरदार एक खास नजर में मुझे अच्छा लगता ,लेकिन जब मेरा नजरिया बदल जाता है तब वही किरदार मेरे लिए बुरा बन जाता है । खैर,सब देखनेवालों के नजरिये पर हैं ।

मोहन रकेश के आषाढ़ का एक दिन नाटक में अनुस्वार और अनुनासिक नामक दो पात्र हैं । उनकी कुछ गुफ्तगू ही काफी हैं .....जीवन के संवेदनहीनता को समझनेकेलिए ....एक गुफ्तगू काफी है इन्हें समझने के लिए .... समाज में इन्हीं तरह के बहुत सारे किरदार है ।

हिंदी अदब में तीन नंबर का महत्व उल्लेखनीय है । सिर्फ तीन कहानियाँ लिखना,फिर अफसानवी अदब पर अपना नाम सुनहरे अलफाजों में लिखवा देना,यह चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की किस्मत है तो नाटक के आधुनिक दौर में (मोहन राकेश) ने सिर्फ तीन नाटकों से एक नाटककार के तौर पर नाटक के महफिल में अपनी खासियत बना रखी है ।

हिन्दी नाटक

डॉ० लेखा. पी.

हिन्दी नाटक

सम्पादिका
डॉ. लेखा पी.

शैलजा प्रकाशन
57-पी, कुंज विहार-II , यशोदा नगर,
कानपुर-2080 011

पुस्तक : हिन्दी नाटक

सम्पादिका : डॉ. लेखा पी.

प्रकाशक : शैलजा प्रकाशन
57- बी, कुंज विहार-II, यशोदा नगर,
कानपुर-2080 011

संस्करण : प्रथम 2017

मूल्य : ₹ 225/-

ISBN : 978-93-80788-62-3

शब्द सज्जा : शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर

मुद्रक : पूजा प्रिंटर्स

HINDI NATAK

By. Dr. Lekha P.

Price : Two Hundred Twenty Five